B.A Part-II, Paper-IV (H)

वियना काँग्रेस Vienna Congress

नेपोलियन ने अपने 15 वर्षों के काल में यूरोपीय राजनीति को प्रभावित किया था। इस अवधि में अनेक परिवर्तन हुए थे। यूरोपीय राज्यों की सीमाओं में काफी हेर फेर हो चुका था। अतः नेपोलियन के हटाने के बाद विजयी राष्ट्रों के समक्ष राजनीतिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह था कि उसके विशाल साम्राज्य के भाग्यनिर्णय पर किस प्रकार की व्यवस्था की जाये, कि ताकि क्रान्तिकारी तत्वों का विनाश और यूरोप में पुनः पुरातन व्यवस्था कायम हो जाती। वास्तव में गैरदल में जिन राष्ट्रों की विजय हुआ था वे प्रतिक्रियावादी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उनका उद्देश्य पुनर्स्थापना तथा वैधता सिद्धान्त से युक्त है, उनका उद्देश्य पुनर्स्थापित व्यवस्थाओं को सुरक्षित बनाये रखने के लिये कटिबद्ध थे।

वियना काँग्रेस में कुल सबसे बड़े सम्राट, तीन राजा था उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया। टर्की के अतिरिक्त यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए थे। यूरोप के इतिहास में पहली बार इतना विशाल सम्मेलन का आयोजन हुआ था। यद्यपि वियना काँग्रेस में विशाल संख्या में प्रतिनिधि ने भाग लिया था, किन्तु चार महाशक्तियों (इंग्लैण्ड, रूस, ऑस्ट्रिया और प्रशा) को इस काँग्रेस में विशेष महत्व था। तथा इस काँग्रेस के निर्णय भी मुख्यतः इनके प्रतिनिधियों द्वारा ही लिये जाते थे। वियना काँग्रेस में भाग लेने वाले प्रमुख देश तथा उनके प्रतिनिधि थे -

ऑस्ट्रिया - वियना काँग्रेस में आस्ट्रिया का प्रतिनिधि मेटरनिक था, जो इस काँग्रेस में भाग लेने वाले

प्रतिनिधियों ने कार्यवाही एवं आवश्यकता अनुसार राजनीतिक तथा आर्थिक का स्वरूप निश्चित प्रभाव को यूरोप के सभी राज्यों ने स्वीकार किया था। 1809 से 1848 तक मेटरनिख यूरोप की राजनीति पर छाया रहा। इस युग को (1809-1848) मेटरनिख युग कहा जाता है।

वियना कांग्रेस में मेटरनिख का प्रभाव था। उसका उद्देश्य ऑस्ट्रिया के हितों की रक्षा करना था। वह स्वतंत्रता तथा समानता का घोर विरोधी था। वह समझता था कि इन सिद्धान्तों से ऑस्ट्रिया को समाप्त हो जायेगा। उसका विचार था कि पुरातन व्यवस्था की स्थापना की जाए तथा राजाओं को अधिकार लौटाये जाएँ। वियना कांग्रेस पर मेटरनिख का प्रभाव था। वियना कांग्रेस के सभी निर्णय उससे प्रभावित थे। यही कारण था कि इस कांग्रेस के निर्णय प्रतिक्रियावादी थे।

रूस — इस कांग्रेस में रूस का प्रतिनिधित्व जार अलेक्जेण्डर प्रथम कर रहा था। वह शक्तिशाली शासक था, किन्तु उसमें मेटरनिख के समान राजनीतिक एवं कूटनीतिक गुण नहीं थे। उसने नेपोलियन को परास्त करने में अहम भूमिका निभाई थी। अलेक्जेण्डर के विषय में लिखा है "अलेक्जेण्डर प्रथम एक कल्पनाशील, आदर्शवादी, अस्थिर, चंचल तथा जो प्रभावित होने वाला तथा अव्यवहारिक व्यक्ति था"।

प्रशा — वियना कांग्रेस में प्रशा का प्रतिनिधित्व हार्डेनबर्ग था। वह राष्ट्रवाद एवं उदारवाद में विश्वास रखता था। अपने देश को शक्तिशाली बनाना उसका मुख्य उद्देश्य था।

इंग्लैण्ड — कैसलरे (Castlereagh) कर रहा था। एक कुशल राजनीतिज्ञ था। कैसलरे एक योग्य व्यक्ति था। नेपोलियन को परास्त करने में इसकी बड़ी भूमिका थी। इंग्लैण्ड मित्र राष्ट्रों के लिए

Scanned with CamScanner

नेपोलियन के युद्ध के समय साहुकार (Banker) का काम किया था। इस कॉंग्रेस को बिखलाने का उद्देश्य हैब्सबर्ग के राजनीतिक एवं आर्थिक दोनों ही पक्षों को देखना था। तथा अपने उद्देश्य में काफी सफल भी हुआ। मैटरनिख राजनीतिक रूप से शक्ति संतुलन बनाये रखना चाहता था ताकि यूरोप में शान्ति की स्थापना की जा सके।

फ्रांस - इस कॉंग्रेस में फ्रांस का प्रतिनिधि तेलराँ (Talleyrand) था। यह नेपोलियन के समय (1797 - 1807) तक फ्रांस का विदेश मंत्री था। परन्तु जब नेपोलियन ने पुर्तगाल पर आक्रमण करने के समय उसने नेपोलियन का विरोध किया था। अतः तेलराँ मित्र राष्ट्रों से मिल गया। वह काफी अनुभवी राजनीतिज्ञ था। उसके प्रयासों के कारण ही फ्रांस को कॉंग्रेस की चार महाशक्तियों के साथ स्थान मिला। इस कॉंग्रेस में उसने वैधता के प्रस्ताव (Principle of Lagitimacy) को मान लिया गया।

वियना कॉंग्रेस की मुख्य समस्याएं - इस कॉंग्रेस के सामने तीन प्रमुख समस्या थी -

1. यूरोप के राजनीतिक मानचित्र का पुनर्निर्माण
2. क्रांति की भावना का दमन करना
3. विजयी राष्ट्रों को पुरस्कृत करना। तथा नेपोलियन का साथ देने वाले राष्ट्र को दंडित करना।

वियना कॉंग्रेस के सिद्धान्त - वियना कॉंग्रेस के निर्णय कुछ सिद्धान्तों पर आधारित थे

1. शक्ति संतुलन का सिद्धान्त - यूरोप में शक्ति संतुलन के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित करना आवश्यक था। ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार का आक्रमण न कर दें। फ्रांस पुनः भविष्य में किसी प्रकार का आक्रमण शुरू न कर दें)

2. वैध राजसत्ता के सिद्धान्त (Principle of Legitimacy) क्रान्ति और नेपोलियन के